डेली कॉलेज, जूनियर स्कूल

हिंदी सामूहिक कविता पाठ – 2018-19

उठो धरा के अमर सपूतो

VI B

उठो धरा के अमर सपूतो,
पुनः नया निर्माण करो।
जन-जन के जीवन में फिर से,
नव स्फूर्ति[1] नव प्राण भरो।

नया प्रात है, नई बात है,
नई किरन है, ज्योति[2] नई।
नई उमंगें[3], नई तरंगें[4],
नई आशा[5] है, साँस नई।
युग-युग के मुरझे सुमनों में
नई-नई मुस्कान भरो।

उठो धरा के अमर सपूतो,
पुनः नया निर्माण करो।

डाल-डाल पर बैठ विहग[6] कुल,
नए स्वरों में गाते हैं।
गुन-गुन, गुन-गुन करते भौंरे,
मस्त उधर मंडराते हैं।
नवयुग की नूतन[7] वीणा[8] में,
नया राग, नव गान भरो।

Scanned by CamScanner

उठो धरा के अमर सपूतों,
पुनः नया निर्माण करो।

कली-कली खिल रही इधर,
वह फूल-फूल मुस्काया है।
धरती माँ की आज हो रही,
नई सुनहरी काया" है।
नूतन मंगलमय" ध्वनियों से,
गुंजित" जग उद्‌गान" करो।

उठो धरा के अमर सपूतों,
पुनः नया निर्माण करो।

सरस्वती का पावन" मंदिर,
शुभ सम्पत्ति" तुम्हारी है।
तुम में से हर बालक इसका,
रक्षक और पुजारी है।
शत्-शत् दीपक जला ज्ञान के,
नवयुग का आह्वान" करो।

उठो धरा के अमर सपूतों,
पुनः नया निर्माण करो।

– द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी

Scanned by CamScanner